शिष्य

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिठ्यपूर्ण सूत्र * चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

- भूमिका ८
- ग्रंथके ज्ञानसंबंधी सूक्ष्म-विश्वके 'एक विद्वान' द्वारा भाष्य ९
- संस्कृत भाषानुरूप हिंदी भाषाके प्रयोग हेतु सनातनका समर्थन ! १२

१. व्याख्या एवं अर्थ १३
२. शिष्यत्वका महत्त्व १३
३. विद्यार्थी एवं शिष्य १३
४. माध्यम एवं शिष्य १४
५. साधक एवं शिष्य १५
६. गुरु-शिष्य संबंध १५
७. गुरुप्राप्ति १७
* गुरुको ढूंढनेका प्रयत्न न करें । १७
* गुरुकी परीक्षा न लें १७
* स्वयं ही अपनेआपको किसीका शिष्य न समझें १८
* गुरुप्राप्ति हेतु क्या करें ? १८
८. गुरुकृपा १९
* 'गुरुकृपायोग'का महत्त्व * गुरुकृपा कैसे कार्य करती है ? १९
* गुरुप्राप्ति एवं गुरुकृपा होने हेतु क्या करें ? २२
* गुरुमंत्रकी अनावश्यकता २३
९. कर्तव्य एवं गुरुऋण २४
१०. गुण (मुमुक्षुत्व, आज्ञाकारिता, नम्रता इत्यादि) २५
११. प्रकार ५७
११ अ. श्रेणी अनुसार (उत्तम, मध्यम एवं कनिष्ठ) ५७

११ आ. मर्यादा एवं पुष्टि भक्ति करनेवाले अंतरंग शिष्य ५९
१२. गुरुके रूप एवं पूजन ५९
१३. गुरुके प्रति व्यवहार कैसा हो ? ६३
* गुरुके पास कैसे जाएं ? * नमस्कार करना ६३
* गुरुकी बातोंसे अधिक महत्त्वपूर्ण है उनका दिया हुआ नाम ६५
१४. शिष्यका जीवन ७७
* व्यावहारिक जीवनमें आचरण ७७
* अध्यात्म आचरणमें लाना ७८
१५. शिष्य एवं गुरुबंधु ८१
१६. पति-पत्नीके एक ही गुरु होना ८३
१७. शिष्यकी परीक्षा ८३
१८. कुंडलीके ग्रह, वार एवं गुरु ८४
१९. गुरुसे क्या मांगें ? ८४
२०. उन्नति किसपर निर्भर है ? ८५
* गुरुप्राप्तिपूर्व एवं पश्चात ८५
* साधक एवं शिष्यकी उन्नति ८५
* शिष्यके प्रकार ८६
२१. ईश्वरप्राप्तितक शिष्यका मार्गक्रमण ८६
२२. नए गुरु करना (गुरु बदलना) ८७
* स्वयं ही परिवर्तित करना ८७
* यह भय कि नए गुरु करनेपर पूर्व गुरु क्रोधित होंगे ८९
* गुरु-आज्ञा होनेपर नए गुरु करना ८९
२३. अधोगतिके कारण ९२
* साधना न करना ९२
* गुरुके विषयमें परिहासपूर्ण बोलना ९२
* गुरुके नामका दुरुपयोग करना ९२
२४. अनुभूति एवं उन्नतिके लक्षण - आध्यात्मिक उन्नतिके लक्षण ९३

मनोगत

प्राथमिक अवस्थाके प्रत्येक साधकको यह ज्ञात रहता है कि '**गुरुके अतिरिक्त कोई तारनहार नहीं**' तथा अगले चरणके साधकको इस बातका अनुभव रहता है । गुरुप्राप्तिके लिए निश्चितरूपसे क्या करना है, यह ज्ञात न होनेसे अनेक साधकोंका मात्र वर्तमान जन्म नहीं, अपितु आगेके अनेक जन्म व्यर्थ जाते हैं । ऐसे साधकोंको कुछ मार्गदर्शन मिले, इस दृष्टिसे यह ग्रंथ लिखा है । गुरुप्राप्ति हेतु किसी आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत व्यक्तिको प्रसन्न करना आवश्यक है, जबकि अखंड गुरुकृपा हेतु निरंतर गुरुको प्रसन्न करना आवश्यक है । इसका सुगम मार्ग है उनकी अपेक्षाके अनुरूप प्रयास करते रहना । उनकी एक ही अपेक्षा होती है – साधना । साधनाके आगेके चरणमें तन, मन, धन एवं प्राण भी श्री गुरुके चरणोंमें समर्पित करना आवश्यक है । यह चरण-प्रति-चरण करनेकी दृष्टिसे शिष्यमें कौनसे गुण आवश्यक हैं, गुरुके प्रति भाव कैसा होना चाहिए, गुरुबंधुओंके साथ आचरण कैसा होना चाहिए, शिष्यकी जीवनपद्धति कैसी होनी चाहिए इत्यादिका विस्तृत व्यावहारिक विवरण इस ग्रंथमें प्रस्तुत है ।

गुरुकृपाका अर्थ क्या है तथा वह कैसे कार्य करती है, इसका भी विवरण प्रस्तुत ग्रंथमें दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि प्रस्तुत ग्रंथके मार्गदर्शनसे जिज्ञासुओंकी साधकतक, साधकोंकी शिष्यतक तथा शिष्योंकी गुरुपदतक प्रगति हो ! – संकलनकर्ता